# आज का पुरुषार्थ by Suraj Bhai

**Date**: 23 March, 2022 **Website**: www.shivbabas.org

**धारणा** – *" जब विघ्नविनाशक बनना है तो जीवन को पवित्रता की प्रकाश से प्रकाशित करने का पुरुषार्थ करे "*

बाबा ने हम सभी को निर्विघ्न जीवन जीने की बहुत सुन्दर प्रेरणा दी है। जो स्वयं विघ्नविनाशक है उनके आगे भी यदि विघ्न आयेंगे तो बाकी संसार के लोगों का क्या हल होगा?

हम अपनी शक्तियों को पहचाने। उनकी स्मृति में रहे। और विघ्नों को योगवल से संकल्पों के वल से और **पवित्रता** के वल से समाप्त करे।

लक्ष्य बना ले, वाह्य विघ्न तो भले ही आते रहे, लेकिन हमारे स्थिति में विघ्न न हो। संकल्प में विघ्न न हो। हमारे अपने ही संस्कार हमारे लिए और दुसरों के लिए विघ्नकारी न बने।

हमारे जीवन जीने का तरीका इतना सुन्दर और सरल हो कि हम छोटी छोटी बातों को सहज ही पार करते चले, उनमें किसी भी तरह की विघ्न हमें मेहसूस न हो।

विघ्न तो आते है, बहुत सारे **विघ्न पूर्व जन्म के कर्मों के कारण आते है।** बहुत सारे विघ्न मनुष्य के मनोविकारों के कारण आते है। क्रोध के कारण, लाभ और अपवित्रता के कारण आते है।

हम अपनी **पवित्रता** को मजबूत करते चले। बाबा आये ही है हमें पवित्र बनाने। और **पवित्रता** का सुख परम सुख होता है। पवित्रता के आधार पर ही पुजा होती है।

पवित्रता स्थापना की कार्य में बहुत बड़ी भूमिका निभाती है। क्योंकि हम धर्म की भी स्थापना कर रहे है। और दैवी स्वराज्य की भी स्थापना कर रहे है।

**पवित्रता के द्वारा धर्म की स्थापना में वल मिलता है।** और बाबा ने अपने बच्चों को पवित्र बना रहे है श्रेष्ठ धर्म की स्थापना के लिए।

तो हम चेक करेंगे, हमारे अंदर **सूक्ष्म** में भी कोई अपवित्रता तो नहीं है? काम की इच्छा, देह का आकर्षण तो नहीं है? हमारे स्वप्न पवित्र होते जाते है?

कोई कह सकते है, स्वप्न थोड़े ही हमारे हाथ में होते है? पर हमारी **स्थिति** यदि श्रेष्ठ हो, अगर हम अपनी योग अभ्यास पर बहुत ध्यान दे, अगर हम अपनी दृष्टि को **आत्मिक** बनाये, दैहिक दृष्टि से अपने को मुक्त करते चले, तो हमारे स्वप्न भी बहुत श्रेष्ठ होंगे, सतोप्रधान होंगे।

हमारी स्वप्न की पवित्रता, हमारी वाह्य पवित्रता को प्रत्यक्ष करती है। अर्थात अगर हम वाह्य रूप से बहुत पवित्र है तो स्वप्न भी पवित्र है।

और अगर स्वप्न में किसी तरह की अपवित्रता है तो हमें समझ लेना चाहिए, आत्मा में, मन में, संस्कारों में कहीं न कहीं अपवित्रता बाकी है।

तो एक तरह से स्वप्न हमारे स्थिति के दर्पण होते है। हम जिस तरह के स्वप्न देखते है, हम अपनी स्थिति को उस आधार से जांच करे।

बहुत सारे स्वप्न तो अनावश्यक होते है। मीनिंगलेस होते है। कोई अर्थ उनका नहीं होता। उनपर हम ध्यान न दे। पर कुछ स्वप्न अवश्य हमें हमारी स्थिति का एक आईना दिखा देते है।

तो आईये हम सभी अपने जीवन को निर्विघ्न बनाये। अपने पवित्रता के प्रकाश को संसार में फैलाये। हमारे पवित्रता का **प्रकाश** बहुत जबरदस्त प्रकाश है। हम इसके महत्व को समझे।

और आज सारा दिन हम इस पवित्रता को बढ़ाने के लिए आत्मिक दृष्टि का अभ्यास करेंगे। **अशरीररीपन** का अभ्यास करेंगे। ताकि हमारी कर्मेन्द्रियाँ भी शीतल हो जाये।

और साथ साथ स्वमान देंगे ....

**" मैं फरिश्ता हूँ .. पवित्रता का फरिश्ता हूँ "**

अपने इस स्वरुप को देखेंगे कि ....

**" मेरे अंग अंग से पवित्रता की गोल्डेन किरणें चारों ओर फैल रही है "**

**" मैं आत्मा इस देह से बिल्कुल न्यारी हूँ " .... न्यारे पन का अनुभव**

**" यह देह अलग .. और .. मैं आत्मा अलग "**

**और सबको भी जब देखे इस नजर से देखे ....**

**" यह सब पवित्र आत्मायें है "**

**और .... " मूल रूप में सभी आत्मायें पवित्र है "**

सारा दिन इस धुन में रहेंगे। इससे पवित्रता की शक्ति भी बढ़ेगी। और हमारा जीवन निर्विघ्न भी बनेगा।

।। ओम शान्ति ।।

**BK Google**: www.bkgoogle.org

**Website**: www.shivbabas.org